बच्चों में पढ़ना–लिखना सीखने और बुनियादी गणितीय क्षमताओं के विविध आयाम

पत्रिका की संवाद श्रृंखला की यह छठवीं परिचर्चा है। पाठशाला के पिछले, यानी आठवें अंक में आपने इस संवाद का पहला भाग पढ़ा होगा। इसमें शुरुआती संख्यात्मक ज्ञान और पढ़ना-लिखना के सन्दर्भ में कक्षाओं में क्या करना सम्भव है और क्या-क्या किया जा सकता है, इसके बहुत-से ठोस उदाहरण शिक्षक साथियों ने साझा किए। बुनियादी गणितीय क्षमता और उसमें भाषा की बहुत बड़ी भूमिका लोगों द्वारा रखी गई, इस अंक में हम इसका दूसरा भाग प्रकाशित कर रहे हैं। इस हिस्से में ज़्यादा केन्द्रित रूप से बुनियादी साक्षरता और संख्या की समझ और उसकी ज़रूरत पर बात है। जैसे बुनियादी संख्यात्मक समझ से क्या आशय है? संख्या की अवधारणा से क्या आशय है? शुरुआती साक्षरता को कैसे समझें? यह क्यों आवश्यक है? सं.

हृदयकान्त दीवान : अभी तक साथियों ने जो बातचीत की है उससे आगे की चर्चा के लिए अर्धेंदु से आग्रह करूँगा कि वह अपनी बात रखें।

अर्धेंदु : बहुत सारे साथी अपने अनुभवों से बहुत सारी बातें रख रहे थे। मैं उनसे जुड़ता हुआ आगे जाऊँगा और गणित पर फ़ोकस करूँगा। पहली बात यह कि कोई किसी को सिखा नहीं सकता, जब तक कोई ख़ुद सीखना नहीं चाहता हो। बच्चे के बारे में बात करें तो बच्चे को अगर ख़ुद सीखना है तो उसको उस प्रक्रिया में ख़ुद शामिल होना पड़ेगा। जब तक बच्चा उस प्रक्रिया से जुड़ाव महसूस नहीं करेगा तब तक वह सीख नहीं सकता। तो एक मुख्य सवाल यह है कि बच्चा सीखने की प्रक्रिया में जुड़ाव कैसे महसूस करेगा। हम जानते हैं कि कुछ बच्चों को गणित पसन्द होता है कुछ बच्चे भाषा पसन्द करते हैं तो कुछ बच्चों को कोई दूसरा विषय भी पसन्द हो सकता है। इसके पीछे उनके कुछ विचार हैं, या तो इन विषयों के शिक्षक उनके साथ बहुत बेहतर तरीक़े से बात करते हैं, या जो संसाधन इस्तेमाल किया जाता है या जो उदाहरण दिया जाता है, उसमें वो जुड़ाव महसूस करता है। इसका मतलब है कि एक शिक्षक के नाते हमको यह ध्यान रखना होगा कि हर बच्चे को उसकी रुचि के हिसाब से कैसे पढ़ाया जाए। दूसरी बात यह कि एक शिक्षक के लिए ये बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी और चुनौती भी है क्योंकि आपकी



चित्र : के आर शर्मा

कक्षा में 30 बच्चे हैं और उन तीस बच्चों को आप पढ़ाना चाह रहे हैं, इन सभी को एक ही तरह की योजना या संसाधनों के साथ पढ़ाना मुश्किल है। जो सीखते हैं वो सीख जाएँगे लेकिन जिनके साथ कुछ दिक़्क़तें हैं या कुछ कारणवश जो समझ नहीं पाते हैं या कुछ संसाधन हैं जिनमें उनको रुचि नहीं आती है, तब इस परिस्थिति में क्या काम किया जाए और कैसे। तीसरी चीज़ है, समझ। बच्चे के जुड़ाव के लिए बहुत सारे काम होते हैं, संसाधन भी कक्षा में हैं, टीएलएम भी कक्षा में भरपूर है, बच्चे को कक्षा में बोलने का मौक़ा भी दिया जाता है उसके बावजूद बच्चे नहीं सीख पाते हैं। मैं कक्षा पहली का शिक्षक हूँ। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि कम-से-कम इतना तो सिखा दूँ कि बच्चा कक्षा दो में चला जाए। लेकिन गणित में एक दिक़्क़त है कि अगर पहली कक्षा में बच्चों ने कक्षा पहली की अवधारणाएँ ठीक से नहीं पढ़ी होंगी, तो कक्षा दूसरी में जाने के बाद उतनी ही समस्याएँ उत्पन्न होंगी। उसी तरह से वह जितना आगे जाएगा उतनी ही दिक़्क़त होगी। इसीलिए हमारी शिक्षा नीति में दिया गया है कि यह लक्ष्य लेकर काम करना है कि बच्चे को बुनियादी भाषा और गणित सिखाना बहुत ज़रूरी है। यह क्यों ज़रूरी है इसपर मैं दो-तीन बात कहना चाहूँगा। एक तो गणितीय कारण है कि बच्चे ने कक्षा एक या दो में जो दक्षताएँ हैं उनको ठीक से नहीं समझा होगा तो आगे की कक्षा में उसको बहुत सारी दिक़्क़तें होंगी। वह पढ़ नहीं पाएगा। बहुत सरल भाषा में बोलें तो बच्चा बहुत संघर्ष करेगा, थक जाएगा। हम उनको कहेंगे कि आप नहीं कर पाते हो। कितना भी काम करें जब तक उस समस्या को नहीं सुलझाएँगे, बच्चे भी परेशान रहेंगे और शिक्षक भी। दूसरी बात यह है कि जब बच्चे और शिक्षक परेशान रहेंगे तो बच्चे का स्कूल छोड़ देना बढ़ जाएगा। तीसरी बात, अकसर जब हम पूछते हैं कि गणित का इस्तेमाल कहाँ होता है, उपयोग कहाँ करते हैं तो अधिकांश का जवाब होता है कि हिसाब-किताब में करते हैं, दुकान में जाते हैं तब और भी बहुत सारे उपयोग होते हैं। माने ख़ासतौर पर यह बात संख्या और आधारभूत संक्रिया के इर्दगिर्द होती है। कक्षा एक, दो, तीन के अन्दर जितनी भी दक्षताएँ हैं इसके इर्दगिर्द ही हैं, चाहे वह संख्या को लेकर हों, जोड़, घटाव, गुणा, भाग को लेकर हों। अतः यह कैसे बेहतर तरीक़े से बच्चे के साथ किया जाए ताकि वो उसको समझ पाए, यहाँ गणित का उदाहरण देता हूँ। कभी-कभी पढ़ाते हुए गुणा करते हैं, जैसे– 215 को 35 से गुणा करना। यहाँ इकाई के 5 को पहले गुणा करते हैं, तीन अंकों के साथ, जब दहाई के साथ गुणा करते हैं तो बच्चे को कहते हैं कि एक घर छोड़कर गुणा करो या एक घर को क्रॉस करो। वहाँ उसको समझाते नहीं हैं कि हमने क्यों एक अंक छोड़ा है, दहाई के एक अंक के साथ गुणा करते हैं तो दहाई में लिखना क्यों शुरू करते हैं। उस संकल्पना को जब तक स्पष्ट नहीं करेंगे तो बच्चा इसी तरह की ग़लती करेगा। हमें इन सब चीज़ों पर ध्यान देना है।



चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

प्राथमिक स्तर पर बच्चे अवधारणा के बावजूद भूल जाते हैं। यहाँ अभ्यास और अवधारणा, दोनों की समझ एक साथ चाहिए। जैसे संसाधन की बात करते हैं कि हमारे पास विभिन्न प्रकार के संसाधन होने चाहिए, कोई गतिविधि होनी चाहिए, गाना, होना चाहिए, कहानी होनी चाहिए। कहानी से भी गणित शुरू कर सकते हैं। अलग-अलग बच्चे की रुचि को ध्यान में रखकर हम अलग-अलग तरीक़े से काम कर सकते हैं। यह भी कि हमारे ज़्यादातर संसाधन दिखाने के लिए होते हैं बच्चे

ख़ुद उसको करके सीखें, ऐसे मौक़े बहुत कम रहते हैं।

हृदयकान्त दीवान : मुझे आपकी तीन-चार बातें महत्त्वपूर्ण लगीं उन्हें रेखांकित करना चाहूँगा। सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये है कि गणित सीखने में, चाहे भाषा सीखने में, बुनियाद बनाना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। इस बात को कई तरीक़ों से कहते हैं, लेकिन जब तक बुनियाद नहीं बनेगी तब तक बच्चा आगे का नहीं सीख सकता। उसी सन्दर्भ में आपने एक और बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही कि हम अकसर बच्चों को सवाल हल करने के नियम बता देते हैं। न तो उनसे यह आग्रह करते हैं कि वो ख़ुद तर्क बताएँ या उसको समझें, और न ही आग्रह करते हैं कि सवाल बनाने की कोशिश करें।

> गणित सीखने में, चाहे भाषा सीखने में, बुनियाद बनाना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। इसको लोग कई तरीक़ों से कहते हैं, लेकिन जब तक बुनियाद नहीं बनेगी तब तक बच्चा आगे का नहीं सीख सकता। उसी सन्दर्भ में आपने एक और बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही कि हम अकसर बच्चों को सवाल हल करने के नियम बता देते हैं। न तो उनसे यह आग्रह करते हैं कि वो ख़ुद तर्क बताएँ या उसको समझें, और न ही आग्रह करते हैं कि सवाल बनाने की कोशिश करें।

दूसरी बात योजना या कक्षा से सम्बन्धित है कि कई स्तर के बच्चे कक्षा में होंगे। बच्चे कक्षा में एक दूसरे से सीख सकते हैं और इस वजह से आप कक्षा में इस तरह की बहुत सारी परिस्थिति बना सकते हैं कि एक दूसरे से सीखने का मौक़ा मिले। पर ऐसे भी अनियमित समूह बनेंगे जिनमें कुछ बच्चे अलग-अलग चीज़ों को करने में सक्षम होंगे। उन समूहों में काम करते-करते बच्चे सीख जाएँगे। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि यह एहसास शिक्षक को होना चाहिए कि कौन-कौन सी चीज़ें बच्चे अब ज़्यादा सक्षमता से पकड़ पाए हैं और कौन-सी चीज़ों पर अब और ज़्यादा गहरे अभ्यास की ज़रूरत है। एक और महत्त्वपूर्ण बात आपने कही कि अकसर हम ये कोशिश करते हैं कि बच्चों को हम कुछ प्रदर्शन करके दिखा दें, कुछ समझा दें, वो इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे ख़ुद उसको करके देखें, स्वयं समझें और अपने शब्दों में रखें या अपने ढंग से सवाल करें।

अब मैं अशोक से आग्रह करूँगा कि वो अपनी बात रखें।

अशोक : बुनियादी संख्यात्मक समझ और बुनियादी साक्षरता एक महत्त्वपूर्ण विषय है ही। अलग-अलग जगहों और नीति में इसपर बात आ रही है। ये बुनियाद है, आगे बच्चा ख़ुद सीख सकता है अगर ये समझ या स्तर वो हासिल कर लेता है तो। मैं अपनी बात को दो चीज़ों पर रखने की कोशिश करूँगा कि बुनियादी संख्यात्मकता को लेकर हमारी दिक़्क़तें या रुकावटें क्या हैं? ये केन्द्र में भी है, सभी नीति के स्तर पर भी इसपर बात कर रहे हैं लेकिन फिर भी इसकी रुकावटें कहाँ पर हैं, क्या-क्या दिक़्क़तें हैं।

मेरे ही उदाहरणों से कहूँ तो रुकावट के तौर पर मुझे लगता है कि कक्षा की प्रक्रिया और गणित पढ़ाने का उद्देश्य इनमें बहुत बड़ा बेमेल और अन्तर लगता है। जैसे कि अभी शिक्षिका ने उदाहरण दिया था कंचों को लेकर कक्षा में काम करने का। कक्षा एक और दो के बच्चों को गिनने के लिए कंचे दिए। जब एक सीध में उनको रखा तो बच्चे उसको आसानी से गिन पा रहे थे, लेकिन जैसे ही उन कंचों को मिला दिया और फिर गिनने के लिए कहा तो बच्चे यह तय नहीं कर पा रहे थे कि हमने शुरू कहाँ से किया और ख़त्म कहाँ। यह महत्त्वपूर्ण है।

इस तरह की रुकावटें या चुनौती आ रही है, वो लगता है कि प्रशिक्षण के जो कार्यक्रम बनाते हैं या प्रशिक्षण होते हैं वो काफ़ी नहीं हैं और उनमें गणित सीखन-सिखाने से सम्बन्धित वास्तविक विचार शामिल नहीं हो पाता। अगर मैं कहूँ कि मैं एक शिक्षक हूँ और मुझे शिक्षा

के तहत बच्चों के साथ कुछ काम करने हैं, तो बुनियादी साक्षरता को बच्चों द्वारा हासिल करने के लिए या हर बच्चा बुनियादी साक्षरता को समझ पाए तो मुझे चुनौतियों को पहचान कर काम करना होगा। जैसे कि इबारती सवाल में क्या करना है, बच्चे यह तय नहीं कर पाते हैं। शिक्षक समाधान के तौर पर बात करते हैं कि हम अगर कक्षा में बच्चों के साथ ऐसी बातचीत करते हैं कि इस प्रश्न में क्या दिया गया है, क्या करना है और कैसे करेंगे? अगर इस तरह के खाँचे बनाकर बातचीत करते हैं तो बच्चों को इबारती सवाल के अर्थ समझने, अर्थ बनाने और यह तय करने में, कि कौन-सी संक्रिया करनी है, मदद मिलती है।

बच्चों के साथ बातचीत करना सिर्फ़ इबारती सवालों तक ही सीमित नहीं है, पूरी गणित की कक्षा में इसे देखा जा सकता है। मुझे लगता है कि एक कक्षा में गणित की सार्थक बातचीत करना बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह लग रही है कि अगर गणित पढ़ाते-पढ़ाते साथ में निरूपण के काम किए जाते हैं, उपयुक्त निरूपण किए जाते हैं तो ये निरूपण बच्चों को उस गणितीय अवधारणा के मूर्त रूप को समझने को लेकर बहुत ही महत्त्वपूर्ण होते हैं। तीसरी चीज़ ये साथ में करने से बहुत मददगार होता है। अगर हम साथ में पैटर्न पर काम कर रहे हैं, जैसे– 22, 27, 32, 37 और जब बच्चों के साथ पैटर्न पर काम करते हुए उनसे पूछते हैं कि अच्छा ये बताओ कि अगली संख्या कौन-सी होगी, ये बढ़ कैसे रहा है और इसके पीछे नियम क्या है। या मैं 15 में 25 जोड़ूँ या 25 में 15 जोड़ूँ तो क्या ये एक ही बात है। ढेर सारे अनुभवों के बीच में ये वाला मुझे सबसे महत्त्वपूर्ण लगता है, जहाँ पर शिक्षक कुछ सामान्यीकरण के काम कर रहे होते हैं और सामान्यीकरण केवल पैटर्न में ही नहीं है, यह संख्याओं में भी है, बीजगणित में तो है ही। अगर सामान्यीकरण के काम करवाए जाते हैं तो संख्यात्मकता के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलती है। कई सारे शिक्षक कहते हैं कि परिवेश का सन्दर्भ देना बहुत मददगार होता है। उदाहरण के लिए, उत्तराखंड के परिवेश में काफल है। काफल एक फल होता है और उस फल को कई बार बच्चे जंगल से लाकर बेचते हैं। अब जैसे वो काफल बेच रहे हैं और काफल का ही प्रोजेक्ट है कि आपने काफल बेचे हैं। काफल को लेकर जब बातचीत की जाती है कि कैसे बिके, क्या समस्याएँ आईं, कितने किलो थे और कितने भाव से बेचे। इस तरह से अलग-अलग प्रोजेक्ट दिए जाते हैं तो ये प्रोजेक्ट समस्या समाधान में मददगार होते हैं। अगर इस दृष्टि के साथ देते हैं तो काफ़ी मददगार होते हैं।



चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

हृदयकान्त दीवान: धन्यवाद अशोक। मैं आपकी बात को संक्षेप में करने की कोशिश नहीं करूँगा क्योंकि आपकी बातें बहुत ही विशिष्ट और अच्छी थीं, पर दो-तीन चीज़ें मैं रेखांकित करना चाहता हूँ। एक तो जो आपने बात कही सामान्यीकरण, बातचीत और एक प्रोजेक्ट के रूप में बच्चों को कुछ काम देना, जिसमें वो कुछ चीज़ करके लाएँ और उसपर चर्चा करें। और आपने कहा कि आप कुछ कथन दें और उस कथन के बारे में बच्चे जाँच करें कि वो सही है या ग़लत, और क्यों सही या ग़लत है। बच्चे भी ऐसे कथन बनाएँ जिसमें उनको भी सामान्यीकरण करने और उसकी जाँच का मौक़ा मिले। इसका अभ्यास करवाना और बच्चों को उसकी अभिव्यक्ति के मौक़े देना बहुत महत्त्वपूर्ण

है। धैर्य रखकर बच्चों के साथ बातचीत करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

अब मैं पल्लवी से आग्रह करूँगा कि अपनी बात रखें।

पल्लवी : अभी मेरे दिमाग़ में संख्यात्मक समझ और साक्षरता को लेकर जो संवाद चल रहा है वो आपके सामने रखना चाहूँगी। इससे उन बड़े प्रश्नों के बारे में सोचने में शायद थोड़ी मदद मिलेगी जो इस बात पर ज़ोर देने से सम्बन्धित हैं कि आख़िर हम शुरुआती साक्षरता और शुरुआती संख्यात्मक समझ के विकास के बारे में आज के समय में इतनी संजीदा तरीक़े से क्यों सोच रहे हैं। दूसरा, हम समझ के विकास पर ज़ोर क्यों दे रहे हैं? हम एक तरह से समझते हैं कि संख्यात्मक समझ और साक्षरता के बाद ही बच्चे पढ़ना-लिखना समझते हैं। मौलिक रूप से बोलना क्या होता है और हम क्यों कहते हैं कि अगर वो आ जाएगा तो पढ़ना-लिखना भी आ जाएगा। ऐसा ही कुछ दिमाग़ में चल रहा था कि एक तरह से वो भी एक टूल है जो हमारे जीवन को आसान बनाता है। हमारे हाथ भी एक टूल हैं, हमारी भाषा भी एक टूल है जिसकी मदद से हम बहुत सारे काम आसानी से कर पाते हैं, जैसे– अच्छी भाषा, अच्छे तर्क या अपनी बात को ठीक ढंग से, संक्षेप में रखने से शायद हमें बहुत बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। लोग हमारी बात को सीधे ही ग्रहण कर पाते हैं। ये एक टूल को गहरा या पैना करने वाला मामला है। गणित और भाषा में कौशल को लेकर बहुत सारी समानताएँ भी हैं। अगर आप देखें तो हम भाषा में भी बहुत सारा अनुमान लगाते हैं। सीखने के दौरान, पढ़ने के दौरान और गणित पढ़ने के दौरान भी अनुमान लगाना पड़ता है। हम कल्पना करते हैं और प्रतीकों से भी समझने का उपक्रम करते हैं। प्रतीकों से समझने की कोशिश करना, मतलब हम एक तरह के अमूर्त में जाते हैं। जो चीज़ हमारे सामने नहीं है मगर हमारे दिमाग़ में है उससे कुछ चीज़ों को जोड़कर उसके आधार पर अपने दिमाग़ में कुछ बुनते, निष्कर्ष बनाते, कुछ मूल्यांकन करते हैं। हम ये गणित और भाषा, दोनों में करते हैं। तो ये दो सवाल जो शिक्षक को भी बहुत परेशान करते हैं कि सब बच्चे तो पढ़ना-लिखना और गणित सीख नहीं पा रहे हैं इसपर इतना ज़ोर क्यों? और दूसरा ये कि हम हमेशा समझ की बात ही क्यों करते रहते हैं क्योंकि जब एक शिक्षक समझ के विकास पर काम करता है तो उसके लिए बहुत सीधे, बहुत आसान रास्ते नहीं रहते हैं। उसको तैयारी करनी पड़ती है, उसको कक्षा में बहुत सारे अवसर बनाने पड़ते हैं। तभी जाकर हम ये जो गणित में टूल हैं गणितीयकरण के और ज़रूरत के अनुसार भाषा को किन्हीं अलग-अलग उद्‌देश्यों को पाने के लिए रूप में लाना और लिखने-पढ़ने को भी उसी तरह उपयोग में लाना, ये सब तभी हो पाता है जब हम उसके लिए अवसर प्रदान करते हैं। अमूर्त को समझने की क्षमता सबमें होती है लेकिन उन सबके लिए अवसर देने पड़ते हैं।

गणित और भाषा में कौशल को लेकर बहुत सारी समानताएँ भी हैं। अगर आप देखें तो हम भाषा में भी बहुत सारा अनुमान लगाते हैं। सीखने के दौरान, पढ़ने के दौरान और गणित पढ़ने के दौरान भी अनुमान लगाना पड़ता है। हम कल्पना करते हैं और प्रतीकों से भी समझने का उपक्रम करते हैं। प्रतीकों से समझने की कोशिश करना, मतलब हम एक तरह के अमूर्त में जाते हैं।

अब समझ पर इतना ज़ोर क्यों? और ये नई-नई चीज़ें कहाँ से आ रही हैं कि बच्चा कल्पना कर पाता है या नहीं, अनुमान लगा पाता है या नहीं, तर्क कर पाता है, संक्षिप्त में प्रस्तुत कर पाता है, विश्लेषण कर पाता है, या नहीं, वग़ैरह-वग़ैरह। अगर हम इसको थोड़े बड़े परिप्रेक्ष्य में देखें तो हमको समझ में आता है कि वो कैसे बहुत ज़रूरी है। जीवन की जटिलता सबके लिए बढ़ रही है क्योंकि अब हमारा जीवन

सिर्फ़ एक गाँव या मोहल्ले तक सीमित नहीं रह गया है। बहुत सारी चीज़ें हो रही हैं और वो सिर्फ़ तकनीकी की वजह से ही नहीं हो रही हैं, वो जटिलता इसलिए भी आ रही है क्योंकि बहुत सारे लोग मिलकर एक साथ होकर बड़े काम कर रहे हैं, पूरे विश्व के लिए कर रहे हैं, मानव जाति के लिए करने की कोशिश कर रहे हैं, और ऐसे में हमें बहुत बड़े फ़लक पर चीज़ों को रखकर देखना पड़ता है। अगर हम वो नहीं करेंगे तो उसके लिए ज़िन्दगी को आसान और सुन्दर बनाने के जो उद्देश्य हैं, वो सब हम हासिल नहीं कर पाएँगे। हमें बड़े फ़लक पर रखकर देखना ही पड़ेगा। जब हम बड़े फ़लक पर रखते हैं तो हम देखते हैं जीवन की इस जटिलता में अगर हमारे बच्चे चार तरह की जानकारी को मिलाकर किसी निष्कर्ष को निकाल नहीं पाएँगे, वो जो पढ़ रहे हैं उसका मतलब क्या दिखाई दे रहा है और क्या वास्तव में व्यक्त किया गया है, मतलब निहितार्थ क्या है, सुझाया अर्थ क्या है, ये सब अगर वो नहीं समझ पाएँगे तो शायद वही होगा कि जो भी सामने आता है उसी को सच मानकर उसी में बहे जा रहे हैं। अगर हमें ऐसे लोग नहीं चाहिए तो हमें उनके अन्दर कुछ क़ाबिलियत भी पैदा करने के अवसर देने होंगे। मतलब आपको उनके अन्दर सब तरह के नज़रियों के बारे में सोचना पड़ेगा। आपको सब तरह की जानकारी को मिलाकर देखना होगा और उसके आधार पर यह तय करना होगा कि किसकी बात सही है, कौन सही तर्क दे रहा है, किसके प्रयास ज़्यादा निष्कपट नज़र आ रहे हैं और किसके नक़ली हैं।

और हम ये सब नहीं समझेंगे तो न सिर्फ़ प्रजातंत्र, बल्कि हमारे स्वंय के आगे का और आने वाले बच्चों का जीवन भी बहुत अच्छा तो नहीं बीत सकेगा। उसमें बहुत तरह के बेकार के संघर्ष होंगे, जो न तो हम अपने जीवन में चाहते हैं, न ही हम अपने बच्चों और उनके बच्चों के जीवन में चाहते हैं। अगर हम इसे बड़े फ़लक पर रखकर देखें तो हमें समझ में आता है कि हम संख्यात्मक समझ, साक्षरता पर बहुत ज़ोर दे रहे हैं, क्यों हम शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर ज़ोर दे रहे हैं क्योंकि ये एक तरह की वंचना है। मतलब अगर किसी को बोलना नहीं आता है तो हम भले ही उसके प्रति कितनी भी सहानुभूति रखें, न बोल पाना एक नुक़सान तो है न। उस टूल से या उस बोलने से वो जितना कुछ कर पाता उससे वो वंचित रह गया। जिसको लिखना-पढ़ना नहीं आता है वो भी एक वंचना है। तो उसमें भी वो बहुत सारी चीज़ों से वंचित रह गया जो वह पढ़ने-लिखने से न सिर्फ़ ज्ञान, बल्कि उस ज्ञान की मदद से अपनी दुनिया में और समझ बनाना, अपने जीवन के बारे में, जीवन की उलझनों के बारे में, मुश्किलों के बारे में क़दम उठा सकता था, उससे वंचित रह गया। और पढ़ना-लिखना भी अब अगर एक सतही तरीक़े से आ गया तो वो समझ विकसित करने में वंचित रह गया जैसे हम बहुत सारे पढ़े-लिखे लोगों को आज देख रहे हैं। क्यों हमको उस समझ पर ज़ोर देना ज़रूरी है, जीवन को जीने और आगे की पढ़ाई को जारी रखने के लिए, बच्चों को स्वतंत्र शिक्षार्थी बनाना क्यों ज़रूरी है ताकि वो उसे ही सच न मानें जो हम उन्हें बताते हैं बल्कि वो ख़ुद भी सच की खोज कर सकें। एक तरफ़ हम देखते हैं कि जीवन को जीने के टूल के रूप में और दूसरा देखते हैं कि जीवन की जटिलताएँ जो बढ़ रही हैं, उनका सामना करने के लिए कैसे ये दोनों चीज़ें मददगार हैं। बस मुझे इतना ही कहना है। धन्यवाद।


चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

हृदयकान्त दीवान : धन्यवाद पल्लवी। आपने तो कई ऐसी बातें कहीं जो लोगों ने पूछी भी थीं, उनका जवाब भी शायद मिल गया होगा। मैं सिर्फ़ दो चीज़ आपकी बात से दोबारा रखना चाहता हूँ। पहली बात जो बहुत महत्त्वपूर्ण आपने कही कि शिक्षा का लक्ष्य क्या है इसे हमें समझना पड़ेगा और ये बात कि जो हम सीखते हैं, जैसे कि भाषा एक तरह से हमारे हाथ के समान है, हमारे एक औज़ार के समान है। जैसे हम हाथ को पैना कर सकते हैं, हाथ की क्षमता को बढ़ा सकते हैं, उसी तरह से हम गणित में, भाषा में और अन्य विषयों में अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं जिससे हम उनका बेहतर इस्तेमाल कर सकें। दूसरी बात आपने कही कि शिक्षा एक ऐसी चीज़ है जो समाज की वर्तमान स्थिति और दशा, दोनों के सन्दर्भ में समझी जानी चाहिए और आज के समय में जो लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ है जिनमें हम जी रहे हैं उस अवस्था में ये जो भी परिस्थितियाँ बन रही हैं उनमें ज़रूरी है कि हर बच्चा बड़ा होकर अपने आसपास के बारे में सोच पाए, समझ पाए और ये भी जान पाए कि जो उसके पास ज्ञान आ रहा है उसको जाँचने का तरीक़ा क्या होगा। ये बहुत महत्त्वपूर्ण है और इसलिए ही हम बुनियादी क्षमताओं पर ज़ोर दे रहे हैं क्योंकि ये एक लोकतांत्रिक समाज का अनिवार्य हिस्सा हैं और ये क्षमताएँ हासिल करने का मतलब है कि आप स्वतंत्र सीखने वाला और स्वतंत्र समझने वाला बन पाएँ जिससे कि जो भी आपके पास घट रहा है उसका आप विश्लेषण कर पाएँ।

> शिक्षा का लक्ष्य क्या है इसे हमें समझना पड़ेगा और ये बात कि जो हम सीखते हैं, जैसे कि भाषा एक तरह से हमारे हाथ के समान है, हमारे एक औज़ार के समान है। जैसे हम हाथ को पैना कर सकते हैं, हाथ की क्षमता को बढ़ा सकते हैं, उसी तरह से हम गणित में, भाषा में और अन्य विषयों में अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं जिससे हम उनका बेहतर इस्तेमाल कर सकें।

मैं चाहता हूँ कि जो भी व्यक्ति पैनल में थे उनमें से कुछ यदि 1 मिनट के लिए कुछ कहना चाहते हैं तो कह सकते हैं। कुछ सवाल भी हैं। एक तो ये सवाल है कि बच्चे गणित से घबरा क्यों जाते हैं। बच्चे उत्तर बता भी देते हैं, लिख नहीं पाते हैं, ग़लती क्यों करते हैं और कॉपी-किताब वग़ैरह से घबरा जाते हैं। अगर इसके बारे में कोई कुछ बहुत संक्षेप में कहना चाहता है तो बताइए। जगदंबाजी आप बताना चाहते हैं, बताइए।

जगदंबा प्रसाद : मैं यह समझ सकता हूँ कि अलग-अलग दक्षताओं में बच्चे कुशल होते हैं। ख़ासतौर पर लिखते समय, पेन-पेंसिल का उपयोग करते समय वो ख़ुद को व्यक्त नहीं कर पाते तो शायद लिखने की उनकी तकनीक कमज़ोर होती है, उसको बढ़ाने के लिए हमको कई सारे प्रयास एक शिक्षक के तौर पर करने पड़ेंगे। जैसा कि हमारे कई सारे साथियों ने बता दिया है, मैंने भी यही सोचा है कि वो समझ तो लेते हैं लेकिन लिखित रूप में व्यक्त नहीं कर पाते हैं। बाक़ी शायद वो गतिविधियों में बहुत अच्छे होते हैं, बोलने में बहुत अच्छे होते हैं, सब चीज़ों में वो अच्छे होते हैं लेकिन लिखने में शायद वो कमज़ोर होते हैं।

संगीता : शिक्षण को लेकर कई सारी बातें की गईं। हम लोगों का जो सरकारी तौर पर प्रशिक्षण रहता है उसमें बहुत सारी ख़ामियाँ रहती हैं क्योंकि हम लोग जो सीखते हैं वो एक तरह से मौखिक ही रहता है। हम लोग जो बच्चों को सिखाते हैं उसे मूर्त रूप में सिखाना चाहिए, जिस तरह से हमें अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में सीखने को मिलता है। सरकार को भी उस तरह से कुछ व्यवस्थाएँ करनी चाहिए। और यह सिर्फ़ खानापूर्ति न हो।

हृदयकान्त दीवान : मैं दो-तीन चीज़ें कह दूँ। पहली बात लिखने के बारे में बात कही गई है जैसा जगदंबा प्रसादजी ने भी कहा कि ये आत्मविश्वास का प्रश्न है या उन औज़ारों को पैना करने का प्रश्न है। अगर बच्चे के लिए वो

सार्थक है, जैसा आप में से बहुत सारे लोगों ने कहा और उसको लगता है कि ये जो चीज़ है वो करना मेरे लिए सार्थक है। लिखने को या अभिव्यक्ति को कभी भी हम ऐसी क्षमता के रूप में बच्चे के सामने नहीं रखते जिससे उसको लगे कि इसके कुछ और लोगों के लिए मायने हैं। दूसरा मसला इसमें है कि लिखना एक तरह से ठोस चीज़ों के साथ से दूर हटकर एक अमूर्त स्तर पर और आगे जाना है। ये भी देखना पड़ेगा कि आप किस समय लिखना शुरू कराएँगे। अर्धेंदु और अशोक दोनों ने कहा कि ये पहचान होनी चाहिए कि किस समय बच्चा क्या कर सकता है। बहुत सारे उदाहरण भी लोगों ने दिए कि कितने सारे ऐसे खेल हम कर सकते हैं जिनमें बच्चे को वो सब गणितीय क्षमताओं में अभ्यास करने का मौक़ा मिले जो उसके सन्दर्भ में उसके लिए सार्थक हैं और जिनसे वो जुड़ सकता है और एक बार उसको वो समझ बने, उसके लिए उसका मक़सद बने, अर्थ बने और एक प्रोजेक्ट रूप में उनके साथ जुड़ पाए। उसके बाद अगर हम उसपर लिखने का कार्य करें तो बेहतर निष्कर्ष हमें मिल सकते हैं।



चित्र : के आर शर्मा

जैसा कि सब लोगों ने कहा है कि हमारे ऊपर अभी बहुत बड़ा दबाव इस बात का भी है कि कोरोना में ये साल लगभग चला गया है। बच्चे जब शुरू में आएँगे, तब जहाँ हमने छोड़ा था उससे बहुत पीछे होंगे। आपको स्कूल खुलते समय यह भी सोचना पड़ेगा कि कहाँ से शुरू करें। क्या हमें जल्दबाज़ी करके वो जो अन्तर है उसको भुलाकर आगे बढ़ना है या जैसा कई लोगों ने कहा है कि हमें चिन्ता करने की ज़रूरत है कि जहाँ से बच्चे पीछे चले गए हैं वहाँ से हम दोबारा शुरू करें, जिससे उनका आत्मविश्वास वापस आए। बहुत छोटे बच्चों के लिए तो जो स्कूल आने की नियमितता है, जो बैठकर सुनने का धैर्य है वो दोबारा से विकसित करना होगा।

सरकारी स्कूल के बच्चे तो इस दौरान शिक्षा से बिलकुल ही विलग रहे हैं, कैसे हम पूरी परिस्थिति में वापस उनको जोड़ पाएँगे और उनमें वो बुनियादी क्षमताएँ विकसित कर पाएँगे जो कि ज़रूरी हैं। मुझे लगता है कि पल्लवी ने हमारा ध्यान इस बात की ओर दिलाया है कि क्यों ज़रूरी है कि हम बच्चे की बुनियादी क्षमताओं को एक तरह से उसके जीने का अभिन्न हिस्सा और उतना ही उपयोगी हथियार मानें जितना कि हम उसके हाथ-पैर को समझते हैं और गणित हो, चाहे भाषा हो वो पूरे आसपास से, पर्यावरण, पर्यावरण अध्ययन, विज्ञान, सभी से जुड़ी हैं क्योंकि वो पूरे जीवन से ही जुड़ी हैं। इसलिए मुझे लगता है कि हमें इसके बारे में सोचने की ज़रूरत है।

अब हम लोग बातचीत को यहाँ ख़त्म करेंगे। इस संवाद में हिस्सा लेने और विचार रखने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद आप सबका। मुझे लगता है कि हम सबने एक दूसरे से बहुत कुछ सीखा एवं फिर कभी और मौक़ा मिलेगा तो कुछ हिस्सों पर और गहराई से हम बात कर पाएँगे। शुक्रिया।